ओमवीर करन की कविताएँ

6/C रिसाली सेक्टर भिलाई पोस्ट न्यू सिविक सेंटर,
जिला –दुर्ग छत्तीसगढ़- 490006
omveerkaran@gmail.com

उलझन

अनजाने लोग अनजाना भय
जाने कैसा होगा आगे का समय
अपनों के बारे में जान नही पाई अबतक
उनलोगों को समझूंगी जाने मैं कब तक
कहते हैं बेटियां दो घरों को जोड़ती हैं
जब वो अपना घर छोड़ती हैं
पर कौन जाने कि किस तरह से जुड़ती हैं
किस तरह वो अपना घर छोड़ती हैं
प्यार का नाम देकर समझौता न करा दे
बंधनों को कोई घर कि मर्यादा न बता दे

भय अनजाना है लेकिन शंका जानी पहचानी है
जो रीत औरों ने निभाई मुझे भी निभानी है
सृजन करना है मुझे कुछ विसर्जन करके
प्यार विश्वास अनजाने लोगों से अर्जन करके
अभी तो केवल यही शंका है यही भय
कैसा होगा आने वाला समय.....।

ये सब हो जाना धर्म है

प्रकृति के साथ अध्यात्म का सामंजस्य बिठाना धर्म है
समभाव साक्षी होकर राग-द्वेष मिटाना धर्म है
काम क्रोध लोभ चित्तजागरण से विदा होते हैं
आदमी के चित्त का जागृत हो जाना धर्म है
छोटों को गले लगाना बड़ों के आगे शीश झुकाना
समुचित रूप से उचित आदर सबको दिलाना धर्म है
पुरानी रीतियाँ जो कुरीतियाँ हैं
अभी उनको पहचानना
और पूरे मन से उन कुरीतियों को मिटाना धर्म है
कोई पैगम्बर कोई अवतार मुक्ति नही दिला सकता
खुद की तलाश में खुद से मुक्ति पाना धर्म है
मुक्ति को इच्छा, लालच बना देना गलत है
मुक्ति से भी मुक्त हो जाना धर्म है
सृष्टि मुझमें समाये या सृष्टि में मैं मतलब एक है
अस्तित्व का किसी भी तरह से खो जाना धर्म है

मैं ही हूँ परमसत्य मैं ही हूँ परमात्मा...

मुझे परमात्मा भी चाहिए और सत्य भी
गुजरूँगा असत्य से, माया से, निरपेक्ष,सापेक्ष सत्यों से
और सम्पूर्ण सत्यों से करूँगा साक्षात्कार
परम सत्य का
गुजरूँगा अंहकार से, आध्यात्म से, समाधि से, योग से
अच्छाइयों से, बुराइयों से,
करूँगा साक्षात्कार परमात्मा का
जब दोनों का साक्षात्कार हो जायेगा अंतरमन में
जब दोनों को पा जाऊंगा अपने अंतरमन में

तब पाऊंगा यही शायद मेरे संघर्षों का निष्कर्ष
परमसत्य है परमात्मा,
परमात्मा में है परमसत्य का स्पर्श
दोनों एक ही हैं मुझे और सम्पूर्ण सृष्टि को समेटे हुए
परमसत्य और परमात्मा एक होकर
मेरे अंतर्मन में बैठे हुए
कह रहे हैं जब तू परमसत्य से गुजरेगा....
तू परमात्मा में उतरेगा
जब तू परमात्मा में उतरेगा
परमसत्य से गुजरेगा
दोनों का महामिलनबिंदु मेरा अंतर्मन मेरी आत्मा है
जो परमसत्य है जो परमात्मा है.....।

मृत्यु पूजी जाती है...

पूरी दुनिया मृत्यु से डरती है
पूरी दुनिया मृत्यु से घबराती है
कहाँ मरना है ये हम तय करते हैं
हमारे यहाँ मृत्यु पूजी जाती है

मृत्यु विश्राम है ठहराव है
यमुना गतिशीलता है बहाव है
ठहराव और बहाव जुड़े हुए हैं हमारे यहाँ
हमारे यहाँ मृत्यु की बहन यमुना कहलाती है

परम्पराओं को कब छोड़ना है कब तोडना है
पता है हमें समय से कैसे नाता जोड़ना है
परम्पराओं को पाखंड नही बनने देते हमारे लोग
कबीर की मृत्यु मगहर में आती है

ज्ञान होना,नासमझ होना मायने नही रखता है
सात्विक प्रयास ही हमारे यहाँ इतिहास रचता है
दादी की नज़रों में अश्वत्थामा कायर है
दादी अभिमन्यु को वीर बताती है
हमारे यहाँ मृत्यु पूजी जाती है

गीता गिरधर के मुख से सुनकर भी
अर्जुन विचलित रह जाता है
गीता सुने बिना भी कर्ण
मृत्यु के समक्ष नही घबराता है
कायर तो पहले ही मरे होते हैं
उनकी मृत्यु नही आती है
मृत्यु तो मोक्ष है वीरों का,
वीरों कि मृत्यु वीरगति पाती है
हमरे यहाँ मृत्यु पूजी जाती है....

शवों को जलाते हैं,दफनाते हैं,
बहाते हैं,गिद्धों को खिलाते हैं
कितने तरीके हैं मोक्ष के
कितने तरीकों से मोक्ष पाते हैं
पर इन कर्मकांडों में एक बात तो भूल ही जाते हैं
मोक्ष तो मृत्यु से पहले की प्रक्रिया है...
मृत्यु तो बाद में आती है
हमारे यहाँ मृत्यु पूजी जाती है

डूबते सूरज उगते सूरज दोनों का मान बराबर है
रात का भी महत्व है दिन का भी आदर है
जीवन उत्सव है हमारे लिये
हमारे यहाँ मृत्यु पूजी जाती है

भुलाना चाहो तो भी ना भुला पाओगे तुम

माना सफ़र लंबा है बहुत इस ज़िन्दगी का
बिछड़ जाएँ पर ना टूटेगा,ये नाता दोस्ती का
ज़िन्दगी के सफ़र में जितनी भी दूर जाओगे तुम
हर घड़ी हर लम्हा याद आऊँगा तुम्हें
भुलाना चाहो तो भी ना भुला पाओगे तुम

लाख कह लेना मन को,मैं पास नही हूँ तुम्हारे
मगर ये जान लेना ये झूठ ही होगा प्यारे
करोगे जो महसूस कभी तन्हाई को तुम
मुझे अपने ही आसपास पाओगे तुम
हर घड़ी हर लम्हा याद आऊँगा तुम्हें
भुलाना चाहो तो भी न भुला पाओगे तुम

लोग बिछड़ते हैं पर मन कहाँ बिछड़ता है
पीछे अतीत का कारोबार इन्हीं यादों से चलता है
फिर तुम कहाँ अलग हो,तुमको भी अतीत का कारोबार चलाना है
मुझे तुम याद आओगी और मुझे तुम्हें याद आना है
जब ऐसा बनेगा रिश्ता भविष्य कि दहलीज पे
तो तुम ही बताओ कैसे बिछड़ जाओगे तुम
हर घड़ी हर लम्हा याद आऊँगा तुम्हें
भुलाना चाहो तो भी ना भुला पाओगे तुम

हिसाब सच झूठ का .....।

सच वक्त के हिसाब से बदलते रहते हैं
झूठ भी अपने हिसाब से चलते रहते हैं
जो सच है वो बाद में झूठ भी हो सकता है
जो झूठ है वो सच बनकर
अपना अस्तित्व खो सकता है
बाइबिल कुरान ने पृथ्वी को
ब्रह्मांड का केंद्र बताया था
ये सच झूठ साबित हुआ
जब नया सच सामने आया था
कितनो को जला दिया गया,
कितनो को दफना दिया गया
गेलिलियो तक को अपने घुटनों पे बिठा दिया गया
सिर्फ इसलिए की सूर्य पृथ्वी का चक्कर काटता है
और ये ज्ञान बाइबिल कुरान बाटता है
क्या अब उन निर्दोषों को वापस लाया जा सकता है
अब ऐसा नहीं होगा ये समझाया जा सकता है
आज भी धर्मग्रंथों में
अपने अपने सच ओढा दिये गए हैं
खौफ लालच के सहारे कई झूठ सच बना दिये गए हैं
जानता हूँ जब भी कोई पैगम्बर या मसीहा
करेगा धर्मग्रंथों को इन झूठों से रिहा
तो उसे भी झूठा ठहरा दिया जायेगा
काफ़िर नास्तिक क्या क्या बता दिया जायेगा
इन संभावनाओं के बाद भी सच अकेला आता है
और सारे झूठों को अकेला ही हराता है
ये अलग बात है बाद में जीते हुए सच पे
झूठ की परतें चढा दी जाती हैं
और उसपे आस्था की मोहर लगा दी जाती है
कहीं आपका सच भी तो मोहरबंद नहीं है
कहीं ये झूठ सच तो नहीं है....???

.....